देश देने की परमेश्वर की प्रतिज्ञा

प्रश्न उठ सकता है कि ''क्या परमेश्वर ने इब्राहीम, इसहाक और याकूब के साथ यह प्रतिज्ञा नहीं की थी कि वह देश उनके वंशजों को ही दिया जाएगा?''

इब्राहीम और उसके वंशजों को देश देने की परमेश्वर की प्रतिज्ञा का पहला उल्लेख इब्राहीम के कसदिया के ऊर से जाकर हारान तक थोड़ी देर टिककर कनान देश में (आज का इस्राएल) जाने के बाद हुआ है। उस समय परमेश्वर ने इब्राहीम से कहा था, ''यह देश मैं तेरे वंश को दूंगा'' (उत्पत्ति 12:7ख)।

जब इब्राहीम उस देश में टिक गया, तो परमेश्वर ने उससे कहा, ''आंख उठाकर जिस स्थान पर तू है वहां से उत्तर-दक्खिन, पूर्व-पच्छिम, चारों ओर दृष्टि कर। क्योंकि जितनी भूमि तुझे दिखाई देती है, उस सब को मैं तेरे वंश को युग युग के लिए दूंगा'' (उत्पत्ति 13:14ख, 15; देखिए व्यवस्थाविवरण 12:1)। बाद में परमेश्वर ने यह प्रतिज्ञा एक वाचा के रूप में दी थी, जिसमें उसने एक सीमा ठहरा दी। मूसा ने गिनती 34:2-12 में अधिक विस्तार से, दस कनानी देशों के भू-क्षेत्र को शामिल करते हुए सीमा बता दी: ''उस दिन यहोवा ने अब्राम के साथ यह वाचा बान्धी, कि मिस्र के महानद से लेकर परात नाम बड़े नद तक जितना देश है'' (उत्पत्ति 15:18)। यह भू-क्षेत्र सुलैमान के राज्य में शामिल था। ''सुलैमान तो महानद से लेकर पलिश्तियों के देश, और मिस्र के सिवाने तक के सब राज्यों के ऊपर प्रभुता करता था'' (1 राजा 4:21क)।

परमेश्वर ने जो प्रतिज्ञा इब्राहीम से की थी उसे इसहाक (उत्पत्ति 26:3, 4) और याकूब के साथ इस प्रतिज्ञा के साथ दोहराया कि यह याकूब की संतान को उसके बाद दी जाएगी (उत्पत्ति 28:13; 35:12)। वर्षों बाद, उसकी संतान के मिसर से निकलने के बाद, परमेश्वर ने इस्राएल के लिए देश देने की प्रतिज्ञा की (निर्गमन 6:4, 8)।

यहोशू की अगुआई में इस्राएलियों ने उस देश पर विजय पाई और उसमें बस गए। यहोशू का काम पूरा हो जाने के बाद, हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर ने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की थी:

> इस प्रकार यहोवा ने इस्राएलियों को वह सारा देश दे दिया, जिसे उसने उनके पूर्वजों से शपथ खाकर देने को कहा था; और वे उसके अधिकारी होकर उसमें बस गए (यहोशू 21:43)।

''जितनी भलाई की बातें हमारे परमेश्वर यहोवा ने हमारे विषय में कहीं उन में से एक भी बिना पूरी हुए नहीं रही; वे सब की सब तुम पर घट गई हैं, उन में से एक भी बिना पूरी हुए नहीं रही'' (यहोशू 23:14ख)।

इस्राएल को प्रतिज्ञा किया हुआ देश तो मिल गया था परन्तु उसे पाना और सम्भाले रखना उनकी ओर से परमेश्वर के प्रति उचित सम्मान दिखाने और उसकी आज्ञाएं मानने पर निर्भर करता था:

''मैं आज आकाश और पृथ्वी दोनों को तुम्हारे साम्हने इस बात की साक्षी बनाता हूं, कि मैं ने जीवन और मरण, आशीष और शाप को तुम्हारे आगे रखा है; इसलिए तू जीवन ही को अपना ले, कि तू और तेरा वंश दोनों जीवित रहें; इसलिए अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम करो, और उसकी बात मानो, और उस से लिपटे रहो; क्योंकि तेरा जीवन और दीर्घजीवन यही है, और ऐसा करने से जिस देश को यहोवा ने इब्राहीम, इसहाक, और याकूब, तेरे पूर्वजों को देने की शपथ खाई थी उस देश में तू बसा रहेगा'' (व्यवस्थाविवरण 30:19, 20)।

मिसर से निकलने वाली उस पीढ़ी में से जिसे परमेश्वर ने देश देने की प्रतिज्ञा की थी (निर्गमन 6:8; 12:25; व्यवस्थाविवरण 9:23) केवल दो ही पुरुष उस देश में आ सके थे (गिनती 32:9-12; व्यवस्थाविवरण 1:35, 36; यहोशू 5:6)। यदि इस्राएल वह सब न करता जिसकी आज्ञा परमेश्वर ने उन्हें दी थी, तो परमेश्वर ने इस्राएल के साथ भी वही करना था जिसकी योजना उसने उन जातियों के साथ करने की बनाई थी जिन्हें वह इस्राएल के सामने से भगा रहा था (गिनती 33:55, 56): उसने उनसे वह देश ले लेना था।

उस देश में रहने के लिए इस्राएल के लिए शर्तें होनी थीं। उत्पत्ति 13:15 में परमेश्वर ने कहा था, ''उस सब को मैं तुझे और तेरे वंश को युग युग के लिए दूंगा।'' परन्तु, इस प्रतिज्ञा में ''युग युग'' इब्रानी भाषा के *ओलम* (olam) शब्द का अनुवाद है जिसका अर्थ ''निरन्तर'' है परन्तु ''अनन्तकाल तक'' होना आवश्यक नहीं। इसका अनुवाद ''सदा तक'' भी किया गया है जैसे ''...मैं ... तेरे पश्चात तेरे वंश को यह देश दे दूंगा, जिससे कि वह सदा तक उनकी निज भूमि बनी रहे'' (उत्पत्ति 48:4ख; निर्गमन 32:13 भी देखिए) वाक्य।

यह दिखाने के लिए कि आवश्यक नहीं कि *ओलम* का अर्थ ''कभी न खत्म होने वाला'' हो कुछ उदाहरण ही काफी होंगे:

(1) परमेश्वर ने कहा कि लोग मूसा की ''सदा'' प्रतीति करेंगे (*ओलम;* निर्गमन 19:9)। कुछ समय बाद ही उनका भरोसा उठ गया और उन्होंने एक और अगुआ नियुक्त करना चाहा था (गिनती 14:4)।

(2) अपने स्वामी से प्रसन्न इब्रानी सेवक ''सदा'' (*ओलम;* निर्गमन 21:6) उसकी सेवा करता था। स्वामी की मृत्यु के बाद, सेवक स्वतन्त्र हो जाता था (अय्यूब 3:19)।

(3) हारून के पुत्रों की याजकाई ''पीढ़ी से पीढ़ी'' के लिए थी (*ओलम;* निर्गमन 40:15)। नया नियम बताता है कि याजकाई बदल चुकी है (इब्रानियों 7:12-14)।

(4) बलिदान की भेंटों के ''सदैव'' (*ओलम;* लैव्यवव्यस्था 6:18) बने रहने की बात कही गई है। परन्तु वे बलिदान आज नहीं चढ़ाए जाते। वे तो ''आने वाली अच्छी वस्तुओं का प्रतिबिम्ब ही'' थे (देखिए इब्रानियों 10:1-4)।

और भी बहुत से उदाहरण दिए जा सकते हैं। प्रतिज्ञा यह थी कि जब तक वे परमेश्वर की आज्ञा मानते हैं, वह देश उनका रहेगा। परन्तु मूसा ने इस्राएलियों को बताया था कि वे परमेश्वर की आज्ञा तोड़ेंगे और ''उस भूमि से उखाड़े'' जाएंगे (व्यवस्थाविवरण 28:63ख)।

परमेश्वर ने वाचा तोड़ने के कारण इस्राएलियों को दण्ड देने की प्रतिज्ञा तो की थी, परन्तु उसकी प्रतिज्ञा थी कि वह उनका पूरी तरह से नाश नहीं करेगा। लिखा है:

> इतने पर भी जब वे अपने शत्रुओं के देश में होंगे तब मैं उनको इस प्रकार नहीं छोड़ूंगा, और न उन से ऐसी घृणा करूंगा कि उनका सर्वनाश कर डालूं और अपनी उस वाचा को तोड़ दूं जो मैं ने उन से बान्धी है; क्योंकि मैं उनका परमेश्वर यहोवा हूं; परन्तु मैं उनकी भलाई के लिए उनके पितरों से बान्धी हुई वाचा को स्मरण करूंगा, जिन्हें मैं अन्यजातियों की आंखों के साम्हने मिस्र देश से निकालकर लाया कि मैं उनका परमेश्वर ठहरूं; मैं यहोवा हूं (लैव्यव्यवस्था 26:44, 45)।

परमेश्वर ने भविष्यवाणी की कि लोग हैरान होंगे कि ऐसा क्यों हुआ:

> और सब जातियों के लोग पूछेंगे, कि यहोवा ने इस देश से ऐसा क्यों किया? और इस बड़े कोप के भड़कने का क्या कारण है? तब लोग यह उत्तर देंगे, कि उनके पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा ने जो वाचा उनके साथ मिस्र देश से निकालने के समय बान्धी थी उसको उन्होंने तोड़ा है (व्यवस्थाविवरण 29:24, 25)।

परमेश्वर ने वाचा की शर्तों के अनुसार इस्राएल के विरुद्ध काम किया अर्थात उन्हें दण्ड दिया। परमेश्वर की चेतावनियों के बावजूद भी वे इस दण्ड के बाद उसकी ओर नहीं मुड़े। परमेश्वर ने यह कहते हुए यिर्मयाह के साथ बात की:

> परन्तु उन्होंने न सुनी और न मेरी बातों पर कान लगाया, किन्तु अपने अपने बुरे मन के हठ पर चलते रहे। इसलिए मैं ने उनके विषय में इस वाचा की सब बातों को पूर्ण किया है जिसके मानने की मैंने उन्हें आज्ञा दी थी और उन्होंने न मानी। ... जैसे इनके पुरखा मेरे वचन सुनने से इन्कार करते थे, वैसे ही ये भी उनके अधर्मों का अनुसरण करके दूसरे देवताओं के पीछे चलते और उनकी उपासना करते हैं; इस्राएल और यहूदा के घरानों ने उस वाचा को जो मैं ने उनके पूर्वजों से बान्धी थी, तोड़ दिया है। इसलिए ... देख, मैं इन पर ऐसे विपत्ति डालने पर हूं जिससे ये बच नहीं सकेंगे; और

चाहे ये मेरी दोहाई दें तौभी मैं इनकी न सुनूंगा (यिर्मयाह 11:8-11)।

यह बात तब होनी थी जब परमेश्वर को यरूशलेम का नाश करना था जो उसके लोगों का अन्तिम बुर्ज था: ''और जाति जाति के लोग जब इस नगर के पास से निकलेंगे तब एक दूसरे से पूछेंगे, यहोवा ने इस बड़े नगर की ऐसी दशा क्यों की है ? तब लोग कहेंगे, इसका कारण यह है कि उन्होंने अपने परमेश्वर यहोवा की वाचा को तोड़कर दूसरे देवताओं को दण्डवत की और उनकी उपासना भी की'' (यिर्मयाह 22:8, 9)।

इस्राएल के लोग दूसरी जातियों के लिए एक सबक बन गए। परमेश्वर की आज्ञा मानने की वाचा तोड़कर उन्होंने अपने आपको उन आशिषों से वंचित कर लिया जो परमेश्वर ने बदले में उन्हें देने की प्रतिज्ञा की थी।